International Journal of Applied Research 2015; 1(12): 965-967

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(12): 965-967
www.allresearchjournal.com
Received: 19-09-2015
Accepted: 20-10-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

कामायनी में सौंदर्य–बोध

डॉ. शिवदत्त शर्मा

मानव सौन्दर्य का उपासक रहा है। उसने हर प्रकार के सौंदर्य की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। सौंदर्य शब्द वस्तुतः अेग्रेजी शब्द एस्थेटिक्स शब्द का पर्याय वाची है। हिन्दी में सौंदर्य शब्द सुन्दर की भाववाचक संज्ञा है। सौन्दर्य की व्युत्पत्ति विभिन्न विद्वानों ने दी है। कुछ विद्वानों की व्युत्पत्ति के अनुसार सौन्दर्य के विषय में विचार किया गया है–

1. आचार्य शुक्ल के अनुसार सौंदर्य बाहर की वस्तु नहीं है,अपितु मन के भीतर की वस्तु है।
2. सुमित्रानन्दन पन्त के अनुसार –अकेली सुन्दरता कल्याणि सकल एंश्वर्यों की खान है।
3. संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य विद्वान कवि कालीदास ने सौन्दर्य की परिभाषा को अलग ढंग से व्याख्यायित किया है–
   यत्र आकृतिः तत्र गुणाः वसन्ति–अर्थात् आकृति में स्वाभाविक सौंदर्य विद्यामान रहता है।
4. वाचस्पति कोश के अनुसार– सौंदर्य के मूल में उन्द, धातु है जिसमें सु प्रत्यय और अरय प्रत्यय लगे हैं जिसका अर्थ है–भली–भान्ति आर्द्र करने वाला।
5. भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार सुन्दर शब्द उन्द और नन्द धातुओं के मेल से बना है।

एक अन्य व्युत्पत्ति के अनुसार इस शब्द की व्यृत्पत्ति असुंध और ददाति शब्दों से मिल कर हुई हैं,जिसका अर्थ है–प्राण देने वाला।
छायावाद के स्तम्भ कवि जयशंकर प्रसाद ने सौन्दर्य के विषय में अपने मौलिक विचार व्यक्त किए हैं–

उज्ज्वल वरदान चेतना का, सौंदर्य जिसे सब कहते हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सुन्दर वह तत्व है जो मन में आनन्द या सरसता उत्पन्न करता है।अनेक विद्वानों ने यद्यपि अपने अपने ढंग से सौन्दर्य शब्द की परिभाषाएं दीं हैं परन्तु सबका सारांश यही है कि जो मन और मस्तिष्क को आनन्द से भर दे वही सौन्दर्य की परिभाषा में आता है। [1]

प्रसाद सौन्दर्य के कवि हैं, उनका सौंदर्य निरूपण भिन्न प्रकार का हैं। मूलतः उनका सौंदर्य निरूपण प्रेम से सम्पृक्त है। स्वतन्त्र रूप में भी उनके काव्य में सौंदर्य निरूपण देखा जा सकता है। उनके सौंदर्य विधान को दो भागों में बांटा जा सकता है।
1 मानवीय रूप–सौंदर्य 2 प्राकृतिक सौंदर्य
अब सविस्तार उनके सौन्दर्य निरूपण का वर्णन किया जाएगा।

1 मानवीय रूपसौन्दय

इसके अन्तर्गत प्रसाद ने कामायनी में नारी और पुरुष के आन्तरिक और बाह्य पक्ष के रूप– सौंदर्य का चित्रण किया है। दोनों के चित्रण में प्रसाद का नारी के प्रति विशेष झुकाव स्पष्ट दिखाई देता है। यही कारण है कि मनु की तुलना में श्रद्धा का रूपसौंदर्य वर्णन अधिक सुन्दर एवं विस्तार लिए हुए है। मनु के विषय में भी कामायनी में रूपसौंदर्य वर्णन संकुचित नहीं है मनु के शारीरिक सौष्ठव को बडे विस्तार से अभिव्यक्त किया गया है। मनु की असीम वीरता, शारीरिक गठन, तथा शारीरिक कान्ति का उल्लेख बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उदाहरण देखिए–

अवयव की दृढ मांस–पेशियां
उर्जस्वित था वीर्य अपार
स्फीत शिराएं, स्वस्थ रक्त का,
होता था जिनमें संचार।

मनु के साथसाथ प्रसाद ने मनु पुत्र मानव के भी शारीरिक सौंदर्य का सुन्दर वर्णन किया है। मानव को नवकिशोर एवं केसरी किशोर कह कर उसके अंग सौष्ठव को कवि की भाषा में इस प्रकार अभिव्यक्त किया है–

वृष रज्जु वाम वर में था
दक्षिण त्रिशूल से शोभित
मानव था साथ उसी के
मुख पर था तेज अपरिमित।

पुरुष के अतिरिक्त नारी के सौन्दर्य निरूपण में प्रसाद अद्वितीय हैं। नारी के रूप–सौंदर्य के चित्रण में कवि की कला दर्शनीय है श्रद्धासर्ग में कवि ने श्रद्धा के रूप सौंदर्य का वर्णन बडे मनोयोग से किया है। श्रद्धा आन्तरिक और बाह्य रूप सौंदर्य का ऐसा सुन्दर वर्णन छायावादी कवियों में अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। [2]

हृदय की अनुकृति बाह्य उदार
एक लम्बी काया, उन्मुक्त,
मधु पवन क्रीडित ज्यों शिशु साल
सुशोभित हो सौरभ संयुक्त।

इसी प्रकार प्रसाद ने श्रद्धा के सुकुमार गौर शरीर का सुन्दर वर्णन किया है। नीले चर्म रोम से अर्द्ध आच्छादित कोमल देह इस प्रकार शोभायमान हो रही है मानों विजली दमक रही हो। प्रसाद ने श्रद्धा के आध्यात्मिक आन्तरिक सौन्दर्य का भी सुन्दर वर्णन किया है। कवि के अनुसार श्रद्धा का शरीर पराग के परमाणुओं से रचित है जिसमें मधु का मिश्रण है। उसकी हंसी आकर्षक है, सदैव उसके मुखमण्डल पर शुभ्र ज्योत्स्ना की तरह मुस्कान फैली रहती है।
कामायनी में ही श्रद्धा के बाद दूसरी स्त्री पात्र इडा है, श्रद्धा हृदय की प्रतीक है और इडा बुद्धि की प्रतीक है। इडा के सौंदर्य वर्णन का एक उदाहरण देखिए–

बिखरीं अलके ज्यों तर्क जल
वह विश्व मुकुट सा उज्ज्वलतम, शशि खंड सदृश था स्पष्ट भाल
दो पदुम पलाश चमक से दृग देते अनुराग विराग का ढाल
गुंजरित मधुप से मुकुल सदृश वह आनन जिसमें भरा गान
वक्षस्थल पर एकत्र धरे संसृति के सब विज्ञान ज्ञान।

2 प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन

प्रसाद सौन्दर्य के उपासक थे। उन्होंने मानवीय सौंदर्य के अतिरिक्त प्राकृतिक सौंदर्य का भी वर्णन बडी सुन्दरता से किया है। उनका मत है कि यह सृष्टि महा चिति से प्रेरित और संचालित है। वे मानते हैं कि प्रकृति और मानव में परस्पर बेजोड मेल है तथा मानव प्रकृति से सदैव प्रेरणा लेता है। मानव के मर्यादाहीन होते ही प्रकृति उसे सबक सिखा देती है। कामायनी के चिन्ता सर्ग में प्रलय का उदाहरण मानव–प्रकृति के असन्तुलन का ही परिणाम है। जब जब मानव अमर्यादित होगा उसे प्रकृति के आक्रोश का सामना करना पडेगा। [3]

द्वार बन्द कर दो उनको तो अब न यहां आने देना।
प्रकृति आज उत्पात कररही, मुझको बस सोने देना।

प्रसाद ने कामायनी में प्रकृति के विभिन्न पक्षों का चित्रण किया है। प्रकृति के आलम्बन रूप, उद्दीपन रूप का वर्णन कामायनी में मिलता है। इसी तरह प्रकृति का मानवीकरण, रहस्यात्मकरूप, अलंकाररूप, प्रतीकात्मक रूप, तथा उपदेशात्मक रूप भी देखा जा सकता है। प्रकृति के आलम्बन रूप के अन्तर्गत कवि ने हिमगिरि, प्रलय, प्रातः, संध्या, रात्रि, कुटीर, नदी, आदि का वर्णन किया है। प्रकृति के रम्य और भयावह दोनों रूपों का आशा सर्ग में चित्रण किया है–

स्वर्ण शलियों की कलमें थीं
दूर–दूर तक फैल रहीं,
शरद इंदिरा के मंदिरा के
मनों कोई गैल रही।

प्रसाद ने कामायनी में प्राकृतिक सौन्दर्य का सुन्दर वर्णन किया है। प्रकृति नायक और नायिका के भावों को उद्दीपक भी दिखाई गई है। प्रसाद जी ने प्रकृति के आलम्बन रूप को कम चित्रित किया है। वियोग उद्दीपन रूप में प्रकृति वर्णन का एक उदाहरण देखिए–

संध्या नील सरोरुह से जो श्याम पराग बिखरते थे
शैल घाटियों के अंचल को वे धीरे से भरते थे,
तृग गुल्मों से रोमांचित सुनते थे दुख की गाथा
श्रद्धा की सूनी सांसों से जो मिलकर स्वर भरते थे।

कामायनी में सर्वत्र प्रकृति का मानवीकरण दिखाई देता है। प्रसाद के छाया वादी कवि होने के कारण प्रकृति का मानवीकरण स्वाभाविक ही है। रात्री का मानवीकरण करते हुए कवि मन की उद्भावना ध्यान देने योग्य है। कवि कहता है कि रात्री किसी से मिलने के लिए चली जा रही है और शायद वह देखने के लिए उत्सुकता पूर्वक घूंघट उठाती है,मुस्कुराती है और ठिठकती हुई आगे बढती है [4]

घूंघट उठा देख मुसक्याती
किसे ठिठकती–सी आती
विजन गगन में किसी भूल सी
किसको स्मृति पथ में लाती।

इसी तरह प्रसाद कामायनी के आशा सर्ग में उषा को जयलक्ष्मी के समान वर्णित करते हैं। कवि ने प्रकृति के परागण से असंख्य उपमानों का चयन किया है। श्रद्धा के लिए कवि ने कामायनी में अनेक प्राकृतिक उपादानों का प्रयोग किया है। प्रकृति को दूती रूप उपदेशात्मक रूप में तो चित्रित किया ही है इसके अतिरिक्त प्रसाद ने प्रतीकात्मक रूप में भी प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण किया है।

भाव सौन्दर्य

कामायनी मात्र एक महाकाव्य ही नहीं अपितु प्रसाद की काव्य कला का सुन्दर उदाहरण है। कामायनी में प्रकृति का मानवीकरण तो अभूत पूर्व है ही, कामायनी में अमूर्त भावों को शब्दचित्रों में उतारने की कला भी दिखाई देती है। चिन्ता, वासना, लज्जा आदि अनेक अमूर्त भाव कामायनी में अभिव्यक्त हैं। कवि चिन्ता को सर्पणी के समान बताते हैं जो सम्पूर्ण विश्व रूपी विवर में व्याप्त है। चिन्तासर्ग में उनकी इस प्रकार की भावाभिव्यक्ति देखी जा सकती है–

ओ चिन्ता की पहली रेखा
अरी विश्व वन की व्याली,
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण,
प्रथम कंध सी मतवाली।

यही नहीं कामायनी में वासना का सुन्दर चित्रण हुआ है। इसी तरह उत्साह नामक भाव का भी चित्रण हुआ है। कवि ने लज्जा के भाव का चित्रण अद्भुत ढंग से किया है लज्जा– भाव किस

प्रकार नारी में अप्रत्याशित रूप में अभिव्यक्त होता है उसका मार्मिक चित्रण द्रष्टव्य है–

छूने में हिचक, देखने में
पलकें आंखों पर झुकती हैं,
कलरव परिहास भरी गूंजे,
अधरों तक सहसा रूकतीं हैं।

कामायनी काव्यभाषा का सन्दर्भ ग्रंथ कहा जा सकता है। प्रसाद ने प्रायः कामायनी में तत्सम शब्दों का सुन्दर प्रयोग किया है। कुछ तद्भव तथा देशज शब्दों का भी कामायनी में प्रयोग मिलता है। भाषा को सुन्दर बनाने के लिए प्रसाद ने चित्रात्मक, ध्वन्यात्मक, लाक्षणिक शब्दों का खूब प्रयोग किया है। चित्रात्मकता का उदाहरण देखिए–

चित्रात्मकता– हा–हा–कार हुआ क्रन्दन मय
कठिन कुलिश होते थे चूर
हुए दिगंत बधिर, भीषण रब
बार–बार होता था क्रूर।

इसी तरह लाक्षणिकता एवं ध्वन्यात्मकता के भी अनेक चित्र देखे जा सकते हैं। अपनी भाषा को संवारने के लिए प्रसाद ने केवल मुहावरे लोकोक्तियों का ही प्रयोग नहीं किया है अपितु शब्द–शक्तियों का भी सुन्दर प्रयोग किया है। प्रसाद के काव्य में बाह्यसौन्दर्य की अपेक्षा आन्तरिक सौन्दर्य के विकास के लिए प्रसाद ने शब्दालंकारों और अर्थालंकारों का स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक प्रयोग किया है। मानवीकरण अलंकार का एक उदाहरण देखिए–

वह विवर्ण मुख मुख त्रस्त प्रकृति का
आज लगा हंसने फिर से। 5

इस तरह कहा जा सकता है कि कामायनी में कवि ने आन्तरिक और बाह्य सौन्दर्य का सुनदर चित्रण किया है। कामायनी में मानवीय सौन्दर्य, प्राकृतिक और भावसौन्दर्य के साथसाथ भाषागत सौन्दर्य सर्वत्र व्याप्त है। हिन्दी साहित्य में कामायनी अद्भुत रचना है।

सन्दर्भ सूचि

1. गजानन मुक्ति बोध कामायनी एक पुनर्विचार पृ134
2. डॉ उदय भानु सिंह कामायनी लोचन पृ79
3. द्वारिका प्रसाद सक्सेना कामायनी में काव्य संस्कृति और दर्शन पृ169
4. मदन लाल कामायनी और उर्वशी में प्रतीक योजना पृ183
5. जयशंकर प्रसाद कामायनी पृ67